● **सुनो और गाओ :**

# २. बूँदें

रिमझिम-रिमझिम गातीं बूँदें,
धरती पर हैं आतीं बूँदें ।

खेतों, बागों, मैदानों में,
हरियाली फैलातीं बूँदें ।

धरती से नालों, नदियों में,
सागर में मिल जातीं बूँदें ।

गरमी से तपते लोगों को,
शीतलता पहुँचातीं बूँदें ।

मेंढक, मोर, पपीहे, कोयल,
सबका मन हरषातीं बूँदें ।

पुरवाई के रथ पर चढ़कर,
इठलातीं, मुसकातीं बूँदें ।

*– रोहिताश्व अस्थाना*

JDFH87

१. **कविता में आए हुए लयात्मक शब्दों को ढूँढ़कर सुनाओ ।**
२. **बूँदें क्या-क्या करती हैं, बताओ ।**

❑ पूरी कविता उचित हाव-भाव, लय, गति, अभिनय के साथ बार-बार सुनाएँ । दो-दो पंक्तियाँ सुनाकर विद्यार्थियों से दोहरवाएँ । कविता का सामूहिक, गुट, एकल रूप में पाठ करवाएँ । कविता प्रश्नोत्तर द्वारा समझाएँ । परिचित कविता उनसे कहलवाएँ ।